

जैव विविधता और अस्तित्व का संकट

गंगानन्द झा

हमारी मौजूदा पीढ़ी के पहले तक हमें ऐसा सोचने का कोई कारण नहीं था कि इस धरती पर हमारी सन्तान का जीवन संकटग्रस्त हो सकता है। पहली बार हमारी पीढ़ी को ही ऐसे सवाल से दो चार होना पड़ा है। विडम्बना है कि इस संभावित विनाश का कारण हमारी बढ़ी हुई वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी क्षमता है। हमारी उपलब्धियां हमें सुरक्षा देने की बजाए विनाश का संकेत दे रही हैं।

पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व पर मंडराते खतरे को दो वर्गों में बांटा जा सकता है। पहला नाभिकीय विभीषिका, जिसके विध्वंसक रूप को हिरोशिमा ने झेला। आज बहुत सारे देशों के पास नाभिकीय अस्त्रों का ज़खीरा मौजूद है और पता नहीं राजनेताओं का विवेक कब तक धरती को सुरक्षित रहने दे।

दूसरा खतरा पर्यावरणीय विभीषिका का है। संसार की प्रजातियों के क्रमशः समाप्त होने की संभावना को इसके कारण के रूप में चिन्हित किया जाता है। पर लोगों में काफी मतभेद हैं कि यह खतरा वास्तविक है या इसे बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जा रहा है।

हर प्रजाति अन्य प्रजातियों पर खाद्य और आवास के लिए निर्भर करती है। एक प्रजाति के विलुप्त होने से कई अन्य लुप्त हो सकती हैं और कुछ अन्य के जीवन पर खतरा मंडराने लग सकता है। विलोप की इस प्रक्रिया को 'श्रृंखला प्रभाव' कहा जा सकता है।

प्रकृति में अनेकों प्रजातियां इतने जटिल रूप में परस्पर जुड़ी हैं कि अनुमान कर पाना मुश्किल है कि किसी एक प्रजाति के लुप्त हो जाने पर श्रृंखला-प्रभाव कहां तक जाएगा। उदाहरण के लिए पचास साल पहले किसी ने अनुमान नहीं किया था कि पनामा बैरो द्वीप के बड़े शिकारी जन्तुओं (तेंदुआ, पहाड़ी बिलाव और क्रूर चील) के विलुप्त होने से छोटे ऐण्टबर्ड का विलोप हो जाएगा और द्वीप के जंगल की वनस्पति प्रजातियों की संरचना में विराट परिवर्तन हो जाएगा। पर ऐसा हुआ क्योंकि बड़े शिकारी जानवर सुअर, बन्दर

और कोटिमंडीज़ जैसे छोटे शिकारी जन्तुओं और मध्यम आकार के खरगोशों जैसे कुतरने वाले जीवों को खाया करते थे।

बड़े शिकारियों के लुप्त होने के बाद मध्यम आकार के शिकारी जन्तुओं की आबादी में विस्फोट-सा हुआ जो ऐण्टबर्ड और उनके अंडों को खा जाते थे। बड़े बीज खाने वाले मध्यम आकार के बीज-भक्षियों की संख्या में भी विराट वृद्धि हुई। वे ज़मीन पर गिरे हुए बड़े आकार के बीजों को खाने लगे जिसकी वजह से बड़े बीज वाले वृक्षों का उगना और बढ़ना रुक गया। परिणाम यह हुआ कि छोटे बीज वाले पेड़ों की संख्या बढ़ने लगी। इससे छोटे बीज खाने वाले चूहों की प्रजातियों की संख्या में विस्फोट हुआ। और इसी वजह से इन चूहों को खाने वाली चीलों, गिद्धों और लैटिन अमरीकन बिल्लों की आबादी बढ़ने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस तरह तीन बड़े शिकारी जानवरों की विलुप्ति के चलते पूरे वनस्पति और जन्तु जगत में परिवर्तन की तरंग उत्पन्न हुई, जिसमें कई प्रजातियां विलुप्त हो गईं।

कई लोग कहते हैं कि जब तक जैव विविधता ह्रास की प्रक्रिया की लपेट में मनुष्य नहीं आता, तब तक इसे लेकर हायतौबा करना बेकार है। उन्हें यह समझने की ज़रूरत है कि दूसरी प्रजातियों की तरह हम भी अन्य प्रजातियों पर निर्भर हैं। अन्य प्रजातियां ऑक्सीजन उत्पन्न करती हैं जिससे हम सांस लेते हैं, उस कार्बन डायऑक्साइड का शोषण करती हैं जिसे हम सांस में छोड़ते हैं, हमें भोज्य सामग्री उपलब्ध कराती हैं, मिट्टी के उपजाऊपन को कायम रखती हैं और हमें लकड़ी, कागज़ और वस्त्र मुहैया कराती हैं।

इन तथ्यों के आलोक में ये लोग कहते हैं कि यदि ऐसा है तो हम ऐसा करें कि इन खास प्रजातियों की सुरक्षा की व्यवस्था करें और बाकी को विलुप्त हो जाने दें। पर, हम ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि ये प्रजातियां भी कुछ अन्य प्रजातियों पर निर्भर हैं। जैसे पनामा के ऐण्टबर्ड।

पर्यावरण श्रृंखला इतनी जटिल है कि हम यह अनुमान

नहीं कर सकते कि किस कड़ी के बगैर हम सुरक्षित हैं। उदाहरण के लिए इन तीन मुद्दों पर विचार करें। पहले पेड़ों की उन दस प्रजातियों की सूची बनाइए जिनसे विश्व में अधिकतम कागज़ की लुगदी बनाई जाती है। फिर इन दस वृक्ष प्रजातियों के लिए उन दस पक्षियों के नाम पता कीजिए जो इन पेड़ों पर लगने वाले कीड़ों को खा जाते हैं। इसके बाद, उन दस कीड़ों की पहचान कीजिए जो इनके फूलों

का परागण करते हैं और उन दस जन्तुओं का पता लगाइए जो इन पेड़ों के बीजों को दूर-दूर तक फैलाते हैं। यह भी देखना होगा कि ये कीड़े और जानवर किन प्रजातियों पर निर्भर हैं? अगर आप चाहते हैं कि कागज़ के लिए लकड़ी निर्बाध मिलती रहे और आपको तय करना हो कि किस प्रजाति को विलुप्त होने दिया जाए, तो आपको इन तीन असम्भव प्रश्नों के उत्तर पाने ही होंगे। **(स्रोत फीचर्स)**